Dated 21/08/2020

B.A Part I (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

शंकर का विवर्तवाद

शंकर सत्कार्यवाद को मानते हैं जिसके अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में अन्तर्भूत होता है। उत्पत्ति का अर्थ अव्यक्त का व्यक्त हो जाना है। परन्तु वे सांख्य के सदृश परिणामवाद में विश्वास नहीं रखते, क्योंकि कार्य और कारण में आकारगत भेद होता है। (जैसे मिट्टी तथा घड़े का आकार) शंकर इसी परिणाम के विरुद्ध विवर्तवाद का प्रतिपादन करते हैं, जिसके अनुसार कार्य कारण का विवर्त है। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि कारण का रूपान्तर कार्य में हुआ है, परन्तु वास्तविकता दूसरी ही होती है। कारण का कार्य में परिणत होना एक आभास मात्र है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। जैसे - अंधकार में कभी-कभी रस्सी को हम साँप समझ लेते हैं। वहाँ रस्सी में साँप की प्रतीति होती है, परन्तु इससे रस्सी साँप में परिणत नहीं हो जाती है क्योंकि प्रतीति वास्तविकता से भिन्न है।

शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है। विश्व का कारण ब्रह्म है। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रह्म का रूपान्तर नानात्मक जगत में हुआ है, परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। ब्रह्म अपरिवर्तनशील है। उसका रूपान्तरण कैसे हो सकता है? ब्रह्म यथार्थ है। विश्व इसके विपरीत अयथार्थ है। जो यथार्थ है उसका रूपान्तर अयथार्थ में कैसे हो सकता है? अतः शंकर मानते हैं कि जगत ब्रह्म का विवर्त है। शंकर का यह मत ब्रह्म विवर्तवाद कहलाता है। विवर्तवाद शंकर के दर्शन का केन्द्र बिन्दु है। शंकर का जगत विचार विवर्तवाद पर ही आधारित है। विवर्तवाद के आधार पर शंकर जगत की सृष्टि की व्याख्या युक्ति संगत ढंग से कर पाते हैं जबकि रामानुज परिणामवाद को मानने के कारण सृष्टि की संगत व्याख्या करने में अपने को असमर्थ पाते हैं।

—x—